

शब्दार्थ और टिप्पणी

अंगीरस/अंगिरा :	ब्रह्मा के दस मानसपुत्रों में से एक सप्त ऋषियों में से एक ऋषि। इन्होंने स्मृतियों की रचना की थी, इसलिए इन्हें स्मृतिकार भी कहा जाता है।	अष्टांग मार्ग :	आठ अंगों वाला मार्ग— 1. सम्यक दृष्टि 2. सम्यक संकल्प 3. सम्यक वाणी 4. सम्यक कर्म 5. सम्यक आजीविका 6. सम्यक व्यायाम 7. सम्यक स्मृति 8. सम्यक समाधि
अंतेवासी :	गुरुकुल या आश्रम में रहने वाला छात्र	आत्मवेत्ता :	आत्मज्ञानी
अंबरीष :	सूर्यवंशी राजा इक्ष्वाकु की अट्टाईसवीं पीढ़ी में भगीरथ के पौत्र, मांधाता के पुत्र और परम वैष्णव भक्त	आर्तनाद :	दर्दभरी पुकार
अतिमानवीय :	मानवेतर, अलौकिक	इक्ष्वाकु :	पुराणों के अनुसार वैवस्वत मनु का पुत्र जो सूर्यवंश (इक्ष्वाकु वंश) का प्रवर्तक था, जिसकी राजधानी अयोध्या थी।
अनात्मवाद :	यह वाद आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। शरीरांत के साथ आत्मा का नाश हो जाता है	उत्ताल :	ऊँची
अनासक्त :	निर्लिप्त, उदासीन	उपदेष्टा :	उपदेशक
अनित्य :	नश्वर, अस्थिर	उपनयन संस्कार :	हिंदू धर्म के अनुसार मानव जीवन के सोलह संस्कारों में से एका इसमें यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात बालक को विद्याध्ययन के लिए भेजा जाता है।
अनुद्विग्न :	शांत, चिंतारहित	कंटकाकीर्ण :	काँटों से भरा हुआ, बाधायुक्त
अपवर्ग :	मोक्ष	कार्तिकेय :	शिव के पुत्र जिनका पालन-पोषण चंद्रमा की स्त्रियों – कृत्तिकाओं ने किया था, इसी कारण यह कार्तिकेय कहलाता है। तारकारि, षण्मुख और कुमार इनके अन्य नाम हैं।
अभिनिष्क्रमण :	संसार से विरक्ति, गृह त्याग	काश्यप :	एक प्राजापति का नाम जो रामायण और महाभारत के अनुसार ब्रह्मा के पौत्र और मारिच के मानसपुत्र थे।
अभिभूत :	चकित, भौचक्का	कुबेर :	धनाध्यक्ष तथा उत्तर दिशा के स्वामी माने जाते हैं। इन्होंने अलकापुरी बसाई थी।
अभीष्ट :	चाहा हुआ, मनोरथ		
अभ्यर्थना :	अनुरोध, विनती		
अभ्युदय :	वृद्धि, उत्तरोत्तर उन्नति		
अमात्य :	मंत्री		
अर्हत :	जीवन मुक्त, मुक्त पुरुष, जिसने जीवन में ही निर्वाण प्राप्त किया है और जीवन के बाद भी निर्वाण को ही प्राप्त होगा, बौद्ध पुरोहित		
अर्हता :	योग्यता, परम ज्ञान, किसी पद के लिए वांछित विशेष योग्यता		
अलक्तक :	पैरों में लगाने का लाल रंग, महावर, आलता		
अश्विनी कुमार :	दो भाई जो आयुर्वेद के आचार्य एवं देवताओं के वैद्य हैं		

कौंडिन्य	: पंचवर्गीय भिक्षु, गौतम बुद्ध के अनुयायी	नंदीग्राम	: अयोध्या के निकट एक गाँव जहाँ भरत ने चौदह वर्ष तक तपस्या की थी।
चातुर्मास	: वर्षा के चार महीनों का संयुक्त नाम 'चातुर्मास' है। इन महीनों में विभिन्न नियमों (भोजन तथा कुछ आचार-व्यवहारों का निषेध) का पालन होता है	निरस्त	: अस्वीकार
		निरोध	: वश में करने की क्षमता
		निर्वाण	: मोक्ष
		निवृत्त	: विरत, मुक्त
च्यवन	: भृगु ऋषि और पुलोमा के पुत्र जो एक प्रसिद्ध ऋषि थे। बलवर्धक च्यवनप्राश ओषधि इन्हीं के द्वारा बनाई गई है।	नैरंजना	: गया (बिहार) के निकट बहने वाली फलगू नदी का पुराना नाम
		नैष्ठिक	: उपनयन से लेकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गुरुकुल में निवास करने वाला ब्रह्मचारी, निष्ठावान, किसी व्रत के अनुष्ठान में लगा हुआ।
जरावस्था	: वृद्धावस्था	परमार्थ	: मोक्ष, उत्कृष्ट वस्तु, यथार्थ तत्त्व
जितेंद्रिय	: जिसने इंद्रियों को अपने वश में कर लिया हो, संयमी	परशुराम	: राजा प्रसेनजित की पुत्री रेणुका और जमदग्नि ऋषि के पुत्र
ज्योतिष्क	: देवताओं का वर्ग	परिनिर्वाण	: पूर्ण निर्वाण, मोक्ष
तत्त्वज्ञान	: अध्यात्म ज्ञान, तीन तत्त्व 1. ईश्वर (सर्वात्मा) 2. चित् (आत्मा) और 3. अचित् (जड़ प्रकृति) संबंधी ज्ञान	परिव्राजक	: भिक्षा माँगकर जीवन-निर्वाह करने वाला संन्यासी
तात	: पिता, आदरणीय व्यक्ति, एक संबोधन जो बराबर के लोगों या अपने से छोटों के लिए प्रयुक्त होता है।	पर्यंक मुद्रा	: योग का एक आसन, बैठने की मुद्रा जिसमें धनुषधारी अपना एक घुटना मोड़ कर और दूसरी टाँग को पीछे रख कर बाण चलाता है।
तृष्णा	: प्यास	पितृ ऋण	: पुत्र उत्पन्न करने से होने वाली ऋण-मुक्ति
त्रिवर्ग	: धर्म, अर्थ, काम-इन तीनों की प्राप्ति ही मनुष्यों का संपूर्ण पुरुषार्थ है। पर बुद्ध के अनुसार त्रिवर्ग नाशवान हैं और उनसे तृप्ति नहीं होती।	पुराकाल	: पुराने समय में, प्राचीन समय में
		पुरुष-सिंह	: मनुष्यों में श्रेष्ठ
		पुष्परिणी	: छोटा जलाशय, कमलयुक्त जलाशय
दुंदुभि	: डंका, नगाड़ा	प्रज्ञा	: बुद्धि
ध्यानयोग	: ध्यान लगाने की योग-क्रिया	प्रतीति	: जानकारी, ज्ञान
ध्यानवस्थित	: ध्यानमग्न	प्रत्यास्मरण	: पुनः स्मरण
नंदन वन	: स्वर्ग में स्थित देवराज इंद्र का उपवन	प्रातिमोक्ष	: आचरण संहिता, साधुओं के लिए नियम

बलि	: दैत्यों का एक राजा, भक्त प्रह्लाद का महाप्रतापी पौत्र, जिससे अश्वमेध यज्ञ के समय भगवान विष्णु ने वामन रूप में तीन पग भूमि दान में माँगी थी।	वज्रबाहु	: दशार्ण देश का एक राजा, जिसने अपनी पत्नी और पुत्र के रोग-ग्रस्त होने पर उन्हें वन में त्याग दिया था।
बाँबी	: सर्प का बिल	वामदेव	: एक वैदिक ऋषि
बृहस्पति	: सौर मंडल का पाँचवाँ और सबसे बड़ा ग्रह, एक ऋषि जो देवताओं के गुरु माने गए हैं।	वाल्मीकि	: रामायण के रचनाकार, आदि कवि, मुनि
ब्रह्मवेत्ता	: ब्रह्म को जानने वाला	विषाक्त	: विषयुक्त, विष में बुझा हुआ
भृगु	: प्रसिद्ध मुनि जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं। परशुराम इन्हीं के वंशज थे।	वृज्जि	: एक प्राचीन जाति जिसकी राजधानी वैशाली थी। वर्तमान मुजफ्फरपुर (बिहार)
भिक्षु	: वह संन्यासी जो भिक्षा द्वारा प्राप्त पदार्थ का सेवन करता है	शाक्य मुनि	: शाक्य वंश में अवतीर्ण होने के कारण गौतम बुद्ध शाक्य मुनि कहलाते थे।
मंगलाचरण	: कार्यारंभ के पूर्व की जाने वाली मंगल-स्तुति	शावक	: पशु-पक्षी का बच्चा
मध्य/मध्यम मार्ग:	तप और भोग इन दो अंतों के बीच का मार्ग	शुक्र	: एक बहुत ही चमकदार तारा, शुक्राचार्य, दैत्यगुरु
मल्ल	: एक वीर क्षत्रिय जाति जिसका कुशीनगर (उत्तर-प्रदेश) के पास राज्य था।	श्रावस्ती	: श्री राम के पुत्र की राजधानी जो उत्तर कोसल के गंगातट पर बसी हुई थी। वर्तमान बलरामपुर (उत्तर-प्रदेश)
महावृक्ष	: पीपल वृक्ष	श्रेयस्कर	: कल्याणकर, मंगलकारी
मांधाता	: सूर्यवंशी राजा युवनाश्व के पुत्र, जिसकी राजधानी आयोध्या थी।	सम्यक आचरण	: उपयुक्त आचरण
मार	: बौद्ध मत में कामदेव को मार कहते हैं जो पौराणिक कामदेव से भिन्न है और मोक्ष-प्राप्ति में एक प्रकार से यह शैतान की भूमिका निभाता है।	सर्वार्थ	: सभी प्रकार के पदार्थ और योग के विषय
मुमुक्षु	: मोक्ष की कामना करने वाला	सार्थवाह	: व्यापारी
मृगदाव	: अनेक मृगोंवाला वन	सिद्ध योगी	: अलौकिक शक्तियों से संपन्न योगी
राजगृह	: बिहार में पटना के निकट एक प्राचीन स्थान जो बौद्धों का तीर्थस्थल है।	सुमंत	: राजा दशरथ के मंत्री तथा सारथी
लिच्छवि	: प्रसिद्ध राजवंश जो प्राचीन मगध के आस-पास का क्षेत्र था और जिसका विस्तार नेपाल के पूर्वी भाग तक था।	सुमेरु पर्वत	: एक कल्पित स्वर्ण पर्वत जिसे पर्वतों का राजा कहा गया है।
		सूर्यकांत मणि	: एक प्रकार का स्फटिक जिसे सूर्य के सामने करने से आँच निकलती है।

□□